निजी स्कूलों में अच्छी शिक्षा मिलती है, यह धारणा जनमानस में गहरी जगह बना चुकी है। लेकिन सच्चाई क्या है? निजी स्कूलों पर किए गए एक अध्ययन की रिपोर्ट इस हकीकत से हमें परिचित करवाती है। अध्ययन का सार-संक्षेप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

गुणवत्ता की परख

निधि गौड़

परिचय

दिल्ली विश्वविद्यालय के जीसस एण्ड मैरी कॉलेज से बीएलएड करने के बाद करीब डेढ़ साल तक निजी स्कूल में शिक्षण कार्य किया। वर्तमान में केन्द्रीय शिक्षण संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय से शोध कर रही हैं।

अक्सर सवेरे बच्चे भारी-भरकम बस्ता लादे स्कूल बस या वैन की तरफ भागते दिखाई देते हैं। मध्यम वर्ग के लिए निजी स्कूल बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रतीक बन चुके हैं। यहां तक कि यह मान्यता अब आम व्यक्ति के मन में भी घर कर चुकी है कि निजी स्कूलों में बेहतर पढ़ाई होती है। इस मान्यता के क्या आधार हैं और यह कितनी उचित है, यह बहस का मुद्दा है। इस तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि सरकारी स्कूलों की मौजूदा स्थिति और प्रशासन के गैर-जिम्मेदाराना रवैये ने भी इस मान्यता को पुष्ट करने में अहम् भूमिका अदा की है। शिक्षा की गुणवत्ता के मानदण्डों पर स्कूलों की प्रभाविकता को जांचने के बजाय सरकारी स्कूलों की तुलना में निजी स्कूल की नियमितता, अंग्रेजी माध्यम, शिक्षण में नियमितता (शिक्षण के उद्देश्य और विधियां उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं), अनुशासन इत्यादि को गुणवत्ता का पैमाना मान लिया जाता है। इसी वजह से अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों का घर के निकटतम सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाने के बजाय दूर के किसी निजी स्कूल में बच्चे का दाखिला करवाने को बेहतर समझते हैं। स्कूल बिल्डिंग, यूनीफॉर्म या अन्य संसाधनों की उपलब्धता माता-पिता को आकर्षित करती है या यह विचार कि निजी स्कूल में शिक्षण एवं अन्य गतिविधियों के लिए बच्चों को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। बच्चे क्या सीख रहे हैं और कैसे सीख रहे हैं; यह कभी गुणवत्ता की बहस का हिस्सा नहीं बनता।

इस परिप्रेक्ष्य में निजी स्कूलों में शिक्षा की स्थिति और गुणवत्ता की परख 'विप्रो ऐप्लाइंग थॉट्स, बैंगलोर' और 'एजुकेशनल इनिशिएटिव्स, दिल्ली' के द्वारा की गई। इन संस्थाओं ने निजी स्कूलों पर एक अध्ययन 'क्वालिटी एजुकेशन' किया है और हाल ही में उनकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस अध्ययन में निजी स्कूलों में शिक्षा की

गुणवत्ता की परख की गई है और इसके नतीजे आम धारणा के विपरीत जाते हैं। इस अध्ययन के लिए दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर के 83 बेहतरीन निजी विद्यालयों (जिनका चयन 2006 में किए गए सर्वेक्षण में से किया गया) और 6 वैकल्पिक विद्यालयों (जो शिक्षाविदों द्वारा सुझाए गए) से आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। इस अध्ययन में कक्षा 4, 6 और 8 के 23,000 बच्चों, 54 प्रधानाध्यापकों और 790 अध्यापकों की भागीदारी रही।

'विप्रो' एवं 'एजुकेशनल इनिशिएटिव्स' द्वारा की गई 'क्वालिटी एजुकेशन स्टडी' (शैक्षिक गुणवत्ता संबंधी अध्ययन) की पहले वर्ष की रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए मैं इसके महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी।

इस अध्ययन के 214 पन्नों को छह भागों में बांटा गया है और जिनके अन्तर्गत अध्ययन की रूपरेखा एवं अध्ययन के नतीजों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इसमें नवम्बर 2010 से फरवरी 2011 तक संग्रहित आंकड़ों (Data) का इस्तेमाल किया गया है। अध्ययन में शैक्षिक गुणवत्ता के गठन एवं मापदण्ड दोनों को जरूरी बताते हुए तीन मुद्दों - बौद्धिक (scholastic), सह-बौद्धिक (co-scholastic) जैसे खेलकूद, नाटक, चित्रकला, वाद-विवाद आदि गतिविधियां और भावात्मक पक्षों (Affective) पर चर्चा की गई है।

पहले चरण में विद्यार्थी, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापकों के दृष्टिकोण को जानने के लिए तीन तरह की प्रश्नावलियां तैयार की गईं, दूसरे चरण में फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई और फिर कुछ स्कूलों में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति एवं लेखन क्षमता को जांचा गया।

बच्चों की विषय संबंधी समझ

कक्षा 4, 6, 8 के बच्चों की विषय संबंधी समझ को जांचने के लिए अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और सामाजिक ज्ञान के दो-दो प्रश्नपत्र प्रत्येक कक्षा के लिए बनाए गए ताकि ज्यादा से ज्यादा अवधारणाओं (concepts) को जांचा जा सके। प्रश्नपत्रों के स्तर को एक समान रखने के लिए कुछ प्रश्नों को दोनों प्रश्नपत्रों में भी डाला गया। कक्षा 4 के प्रश्नपत्र में 59 प्रश्न थे। प्रश्नपत्र को पूरा करने के लिए बच्चों को 90 मिनट का समय दिया गया था। कक्षा 6 के प्रश्नपत्र में 78 प्रश्न थे जिसे पूरा करने के लिए 120 मिनट का समय दिया गया था और कक्षा 8 के प्रश्नपत्र में 93 प्रश्न थे जिसे पूरा करने के लिए 135 मिनट का समय दिया गया था। यह प्रश्न 'ASSET' प्रश्नावलियों पर आधारित थे। बच्चों के शैक्षिक स्तर को समझने के लिए विषय आधारित बौद्धिक क्षमताओं पर प्रश्नपत्र तैयार किए गए। इन प्रश्नपत्रों में ASSET, Trends in Mathmatics and Science Study (TIMES), Progress in Reading Literacy Study (PIRLS), Civic Education Study (CIVED) और Educational Initiatives (EI) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किए गए अध्ययन का भी इस्तेमाल किया गया।

अंग्रेजी

अंग्रेजी भाषा में पूछे गए प्रश्नों के माध्यम से पढ़ने की प्रक्रिया पर पांच दक्षताओं को जांचा गया। यह दक्षताएं तो सभी कक्षाओं में एक-सी थीं परन्तु कक्षा 4, 6 और 8 के स्तरों के अनुसार उन्हें बनाया गया था। अन्त में एक छोटे अध्ययन में बच्चों से लिखित कार्य भी करवाया गया ताकि उनकी अभिव्यक्ति, भाषा और व्याकरण के ज्ञान को जांचा जा सके। इसे जांचने के लिए पूछे गए कुछ प्रश्न नमूने के रूप में नीचे दिए गए हैं :

अंग्रेजी (कक्षा 4)

एक समय की बात है कि 87 वर्ष का लेबन नाम का एक बूढ़ा व्यक्ति अपना जीवन शांति और चैन से बिता रहा था। वह अत्यन्त गरीब होने पर भी प्रसन्न रहता था...

...जब वह घर पहुंचा तो उसने चूहेदानी के नीचे गोंद लगाकर उसे छत से टांग दिया...

''अच्छी कृपा हुई मुझ पर!'' एक चूहा चिल्लाया। ''उधर देखो! वहां फर्श है!''

''हे भगवान!'' दूसरा चीखा। ''हम छत पर खड़े हैं!''

''अब मुझे डर लगने लगा है।'' एक और ने कहा।

''मेरा सारा खून मेरे सिर में इकट्ठा हो रहा है'', एक और ने कहा।

''यह भयानक है!'' एक लम्बी मूछों वाले बुजुर्ग चूहे ने कहा। ''यह वास्तव में बहुत भयावह है! हमें शीघ्र ही कुछ करना चाहिए!''

''यदि मैं और कुछ देर अपने सिर के बल खड़ा रहा तो मैं बेहोश हो जाऊंगा!'' एक छोटा चूहा चिल्लाया।

''मैं भी!''

''मैं यह नहीं झेल सकता!''

''हमें बचाओ! कोई कुछ जल्दी करो!''...

कहानी के इस अंश को पढ़ने के बाद बच्चों को नीचे दिए गए प्रश्नों के जबाव देने थे।

प्रश्नः 1 लेबन ने चूहेदानी कहां रखी थी?

अ. टोकरी में।

ब. चूहे के बिलों के पास।

स. कुर्सी के नीचे।

द. छत पर।

प्रश्नः 2 तुम्हें इस कहानी के द्वारा कैसे पता चला कि चूहे क्या सोच रहे हैं?

अ. लेबन चूहों के बारे में क्या सोच रहा है।

ब. चूहे कहां रहते थे।

स. चूहे एक दूसरे से क्या कह रहे हैं।

द. चूहे किस तरह के थे।

(पृष्ठ 35)

पहले प्रश्न में बच्चों को कहानी में दी गई जानकारी का इस्तेमाल करते हुए जवाब देना था और 47 प्रतिशत बच्चों ने इसका सही उत्तर दिया।

दूसरे प्रश्न में बच्चों को कहानी में दिए गए सुराग ढूंढ़कर यह अर्थ निकालना था कि चूहे क्या सोच रहे थे। केवल 29.2 प्रतिशत बच्चे इसका सही उत्तर दे पाए। इससे पता चलता है कि बच्चे कहानी में दी गई स्पष्ट जानकारी तो निकाल पाते हैं, परन्तु जानकारी का उपयोग करके अनुमान लगाना हो तो उन्हें कठिनाई होती है।

गणित

गणित में संख्या ज्ञान, गणितीय संक्रियाओं (mathematical operations), भिन्न, दशमलव, अनुपात, प्रतिशत, नपाई, अनुमान लगाना, डेटा इंटरप्रिटेशन (Data interpretation), बीजगणित, रेखागणित और समस्या समाधान (Problem solving) की समझ को जांचा गया। प्रश्नपत्र में पूछे गए कुछ प्रश्नों को नमूने के तौर पर नीचे दिया गया हैः

कक्षा 4

प्रश्नः एक मेज पर चार लोग बैठ सकते हैं। 28 लोगों को बिठाने के लिए कितनी मेजें चाहिएं, यह तुम्हें कैसे पता लगेगा?

अ. 28 को 4 से गुणा करके।

ब. 28 को 4 से भाग करके।

स. 4 को 28 में से घटा कर।

द. 4 को 28 में जोड़ कर।

(पृष्ठ 29)

बच्चों की जोड़, गुणा, घटाने और भाग की समझ को जांचने के लिए उपरोक्त प्रश्न पूछा गया था। केवल 47.1 प्रतिशत बच्चे इस प्रश्न का सही उत्तर दे पाए।

कक्षा 8

प्रश्नः $\frac{1}{5} - \frac{1}{3}$ को हल करने का सही तरीका क्या है ?

$$\frac{1}{5} - \frac{1}{3} = 1 - \frac{1}{5} - 3$$

$$\frac{1}{5} - \frac{1}{3} = \frac{1}{5} - 3$$

$$\frac{1}{5} - \frac{1}{3} = 5 - \frac{3}{5} \times 3$$

$$\frac{1}{5} - \frac{1}{3} = 3 - \frac{5}{5} \times 3$$

इस प्रक्रियात्मक प्रश्न का 39.6 प्रतिशत बच्चे सही तरह से हल कर पाए।

विज्ञान

विज्ञान में चार बुनियादी क्षमताओं जैसे कि तथ्यों की जानकारी, प्रयोगात्मक क्षमता, विश्लेषण की क्षमता और सृजनात्मक क्षमताओं को जांचा गया। इसके अलावा पर्यावरण अध्ययन, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान पर भी प्रश्न पूछे गए। कुछ नमूना प्रश्न नीचे प्रस्तुत हैंः

कक्षा 6

प्रश्नः अनुपम ने दो बिल्कुल एक जैसे कागज P और Q लिए। उसने P को तोड़-मरोड़ कर एक गोला-सा बना लिया।

अब बताओ P और Q के बारे में निम्न में से कौनसा वाक्य सही है।



कागज P
(तुड़-मुड़ा)



कागज Q
(नया, बिना तुड़-मुड़ा)

अ. P का वजन Q से ज्यादा है।

ब. Q का वजन P से ज्यादा है।

स. P और Q का वजन एक समान है।

द. P और Q दोनों में कोई वजन नहीं है।

(पृष्ठ 34)

केवल 22 प्रतिशत बच्चों ने उत्तर में 'स' का चुनाव किया जो सही

उत्तर था। 41 प्रतिशत बच्चों को लगता है कि 'अ' ही सही जवाब है यानी P का वजन Q से अधिक है। यह जवाब चुनते समय शायद उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि वजन बढ़ाने एवं घटाने के लिए मात्रा को घटाना या बढ़ाना पड़ता है। 15 प्रतिशत बच्चों ने 'ब' विकल्प का चुनाव किया। यह जवाब चुनते समय बच्चों ने शायद केवल कागज के साइज पर ध्यान दिया होगा।

कक्षा 4, 6, 8 तीनों कक्षाओं में विज्ञान का निम्न प्रश्न पूछा गया।

प्रश्नः एक जानवर के 6 पैर हैं। यह कौनसा जानवर हो सकता है?

अ. मकड़ी

ब. मक्खी

स. छिपकली

द. कनखजूरा

(पृष्ठ 38)

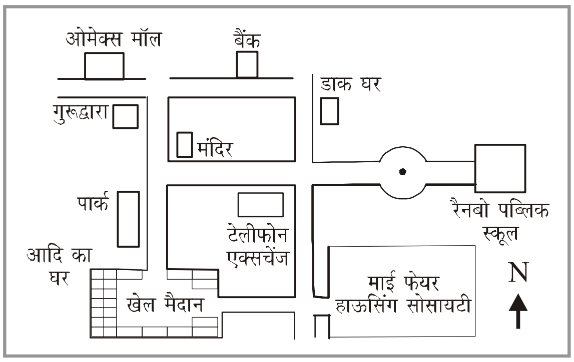
कक्षा 4 के केवल 23.2 प्रतिशत, कक्षा 6 के 31.1 प्रतिशत और कक्षा 8 के 35.6 प्रतिशत बच्चे इस प्रश्न का सही उत्तर दे पाए। सभी कक्षाओं के करीब 45 प्रतिशत बच्चों ने विकल्प 'अ' चुना जो गलत जवाब था। इन बच्चों को यह गलतफहमी है कि मकड़ी के 6 पैर होते हैं।

सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान में ऐतिहासिक विचारों के विश्लेषण, समय के क्रम-अनुक्रम (chronological sequence), नागरिकता और शासन प्रणाली की समझ, मानव और पर्यावरण के बीच के संबंध और नक्शे एवं ग्राफ की समझ पर आधारित प्रश्नों को शामिल किया गया। सामाजिक मुद्दों पर बच्चों के विचारों और मनोभावों को समझने के लिए इसी प्रश्नपत्र में एक अंश जोड़ा गया। पूछे गए प्रश्नों के कुछ नमूने नीचे प्रस्तुत हैंः

कक्षा 4 (पर्यावरण अध्ययन)

प्रश्नः आदि अपने घर के पास ही रेनबो पब्लिक स्कूल में जाता था। नीचे दिए गए नक्शे को ध्यान से देखते हुए जिसमें उसके घर और स्कूल की स्थिति (location) दिखाई गई है, प्रश्नों के उत्तर दीजिए।



आदि के स्कूल के रास्ते में एक मंदिर पड़ता था, आदि के घर से मन्दिर किस दिशा में स्थित है?

अ. उत्तर

ब. उत्तर-पूर्व

स. उत्तर-पश्चिम

द. पश्चिम

(पृष्ठ 36)

मात्र 30 प्रतिशत बच्चों ने इसका सही उत्तर (विकल्प ब) दिया। 23 प्रतिशत बच्चों ने गलत उत्तर (विकल्प अ) दिया। छात्र ऐसा सोचते हैं कि जो जगह ऊपर की ओर स्थित है वह उत्तर दिशा में स्थित है। 17 प्रतिशत बच्चों ने गलत उत्तर (विकल्प स) दिया, यह बच्चे उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम दिशाओं को लेकर दुविधा में थे। 12 प्रतिशत बच्चों ने गलत विकल्प चुना। यह बच्चे शायद मुख्य (cardinal) और मध्यवर्ती दिशाओं के संबंध में स्पष्ट नहीं थे। इससे पता चलता है कि ज्यादातर बच्चों को यह गलतफहमी है कि नक्शे में उत्तर दिशा ऊपर की तरफ होती है और दक्षिण दिशा नीचे की तरफ होती है। एक स्थान पर खड़े होकर बच्चे दायें, बायें, आगे, पीछे को दिशाओं के नजरिए से नहीं समझ पाते।

कक्षा 4

प्रश्नः निम्नलिखित में से कौन आज भी जीवित है?

अ. महात्मा गांधी

ब. इंदिरा गांधी

स. राजीव गांधी

द. सोनिया गांधी

(पृष्ठ 36)

34 प्रतिशत बच्चों ने 'ब' और 'स' विकल्प चुने। 9 प्रतिशत बच्चों ने विकल्प 'अ' चुना। यह आश्चर्यजनक बात है कि तथ्यात्मक सामान्य ज्ञान पर आधारित इस प्रश्न का केवल 38 प्रतिशत बच्चे ही जवाब दे पाए। इससे पता चलता है कि बच्चों को सामान्य ज्ञान के सरल और प्रसिद्ध (well known) तथ्यों का जवाब देने में भी कठिनाई होती है।

सामाजिक मुद्दों पर बच्चों की समझ

कक्षा 4, 6 और 8 के बच्चों के लिए सामाजिक मुद्दों पर प्रश्न पूछे गए। कुछ प्रश्न नमूने के रूप में नीचे दिए गए हैंः

जेंडर संबंधित

प्रश्नः अमृता दस वर्ष की लड़की है। उसकी मां घर में आया का काम करती है और उसके पिता खेतों में मजदूर के रूप में काम करते हैं। अमृता की दो बहनें और एक भाई है। वे सभी अमृता से छोटे हैं। उसके पिता कहते हैं कि अमृता को स्कूल जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि वयस्क होने पर उसकी शादी हो जाएगी और वह घर छोड़कर चली जाएगी।

आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

अ. सभी लड़कियों को स्कूल जरूर जाना चाहिए चाहे वे कितने ही गरीब परिवार से हों।

ब. यह अच्छा है कि वह घर में रहे और अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करे।

स. यदि वे गरीब हैं और अपने एक ही बच्चे को स्कूल भेज सकते हैं तो उन्हें लड़के को भेजना चाहिए।

द. लड़कियों जब उनकी शादी हो जाती है तो वे अपने माता-पिता की कोई सहायता नहीं करती हैं, अतः उन्हें स्कूल जाने की जरूरत नहीं है।

(पृष्ठ 44)

40-43 प्रतिशत बच्चों का मानना था कि लड़कियों के लिए शिक्षा उतनी जरूरी नहीं जितना घर के काम करना है। अगर लड़के और लड़की में से किसी एक को पढ़ने का मौका देना हो तो यह मौका लड़कों को मिलना चाहिए। लड़कियों की शिक्षा पर संसाधन लगाना व्यर्थ है। उच्च कक्षाओं में भी बच्चों की इस सोच में कुछ ज्यादा अंतर नहीं पाया गया।

विकलांगता संबंधित

प्रश्नः स्कूल में माया एक नई छात्रा है जो पहिए वाली कुर्सी (Wheel Chair) पर आती है। अन्य छात्र माया के बारे में जानने को उत्सुक हैं।

आपके विचार से वे माया के बारे में क्या सोचते हैं?

अ. वह मजेदार लगती है, चलो उसको दोस्त बनाते हैं

ब. वह पहिए वाली कुर्सी से चलती है तो वह हमेशा हमसे सहायता मांगेगी

स. वह पढ़ाई ज्यादा अच्छी नहीं कर पाएगी

द. वह हमेशा दुखी रहेगी क्योंकि वह चल नहीं सकती

(पृष्ठ 47)

समग्रतः तीनों कक्षाओं के 20 प्रतिशत बच्चे विकलांग बच्चों को बोझ समझते हैं। 14 प्रतिशत बच्चों को लगता है कि इन बच्चों में बौद्धिक क्षमता की कमी होती है। 28 प्रतिशत बच्चे सोचते हैं कि यह बच्चे दुखी रहते हैं। कक्षा 4 से कक्षा 8 तक पहुंचते-पहुंचते बच्चे विकलांग बच्चों को लेकर ज्यादा सहनशील रवैया अपनाते हैं।

रिपोर्ट के नतीजे

बच्चों की विषय आधारित परीक्षा में प्रदर्शन : कुछ नतीजे

इस अध्ययन में भारतीय बच्चों का शैक्षिक स्तर अंतर्राष्ट्रीय बच्चों के शैक्षिक स्तर से कम पाया गया। यही नहीं SLIMS 2006 के अध्ययन के मुकाबले इस अध्ययन में बच्चों का प्रदर्शन खराब रहा। कक्षा 4, 6, 8 में गणित विषय में बच्चों का प्रदर्शन काफी असंतोषजनक रहा।

इस अध्ययन में पाया गया कि इन स्कूलों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चों को समझने की जगह रटने की आदत हो गई है। इसलिए प्रक्रियात्मक (Procedural) प्रश्नों के उत्तर ज्यादा सफलतापूर्वक दे पाते हैं लेकिन प्रयोगात्मक (Application Based) प्रश्नों को करने में उन्हें परेशानी होती है। कक्षा 8 में गणित और विज्ञान के विषयों में लड़कियों के मुकाबले लड़कों ने ज्यादा बेहतर प्रदर्शन किया। व्यवहारिक दक्षताएं जैसे नक्शा पढ़ना, लिखते या मापते समय भाषा का प्रयोग और सामान्य ज्ञान आदि की समझ इनमें पूरी तरह विकसित नहीं हुई है। यह भी पाया गया कि शुरुआती स्तर पर अगर किसी प्रकार की अवधारणात्मक (Conceptual) कमी रह गई है तो वह आगे चलकर भी दूर नहीं हो पाती।

सामाजिक मुद्दों पर बच्चों की समझ : नतीजे

कक्षा 4, 6 और 8 में पढ़ने वाले करीब 40-43 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि लड़कियों के लिए शिक्षा उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती जितना घर के काम सीखना। कक्षा 4 और 8 के करीब 15-20 प्रतिशत बच्चों का मानना है कि क्षमताएं जेंडर पर आधारित होती हैं। कक्षा 8 के करीब 15 प्रतिशत बच्चे मानते हैं कि लड़कियां अपने माता-पिता पर बोझ होती हैं। यह सभी संख्याएं इशारा करती हैं कि बचपन से ही बच्चों के मन में लड़कियों को लेकर भेदभावपूर्ण भावना जाग्रत हो जाती है। ध्यान देने की बात यह है कि यह सभी बच्चे शिक्षित एवं संपन्न परिवारों के हैं और शहरों के बेहतरीन स्कूलों में पढ़ते हैं।

धार्मिक विविधता पर कक्षा 8 के बच्चों से नीचे दिया गया प्रश्न पूछा गया थाः

प्रश्नः नीचे दिए गए वाक्यों में से आप सबसे ज्यादा किससे सहमत होंगे?

अ. अलग-अलग धर्म के व्यक्तिओं को शादी नहीं करनी चाहिए, चाहे वे एक-दूसरे को पसंद करते हों।

ब. कुछ धर्मों से जुड़े लोग बजाय दूसरे धर्मों के ज्यादा हिंसक होते हैं।

स. लोग एक-दूसरे के नजदीक समझ और सम्मान के कारण आते हैं, न कि धर्म की वजह से।

द. कभी-कभी लोगों के पास अपने धर्म को बचाने के लिए दूसरों से लड़ने और मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं होते।

(पृष्ठ 46)

धार्मिक विविधता पर बच्चों से प्रश्न पूछे जाने पर यह पाया गया कि करीब 50 प्रतिशत बच्चों के मन में धर्म को लेकर पहले से ही कुछ धारणाएं बन चुकी हैं और उनका मानना है कि धार्मिक विविधताओं और इससे जुड़े मुद्दों में जरूरत पड़ने पर हिंसा से भी काम लिया जा सकता है।

नागरिकता के संदर्भ में भी कक्षा 6 के बच्चों से प्रश्न पूछा गयाः

प्रश्नः आपके राज्य के राजनैतिक दलों के नेता दूसरे राज्यों से आकर बसे लोगों के बारे में नीचे दी गई बातें कहते हैंः

- वे सही मायने में, आपके राज्य के लोगों के रोजगारों को हथिया लेते हैं।
- वे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होते हैं और आपके राज्य की परंपराओं को नष्ट करेंगे।

आपका जवाब क्या है?

अ. कोई भी मेरे राज्य में कहीं भी स्वतंत्रतापूर्वक रह सकता है, जहां भी वे चाहें।

ब. वे मेरे राज्य में रह सकते हैं लेकिन उन्हें कोई भी रोजगार नहीं दिया जाना चाहिए।

स. मेरे राज्य में कोई भी रह सकता है लेकिन उन्हें राज्य की परंपराओं का पालन करना होगा।

द. बेहतर यही है कि वे अपने ही राज्य में रहें अन्यथा मेरे राज्य में झगड़े होंगे।

(पृष्ठ 46)

दूसरे राज्यों से आकर बसने वाले लोगों को लेकर करीब 60 प्रतिशत बच्चे असहनशील रुख रखते हैं। उनका मानना है कि इन लोगों की वजह से उनके राज्य के लोगों को नौकरियां नहीं मिल पातीं और यह लोग धार्मिक तनाव का भी कारण बनते हैं।

करीब 70-80 प्रतिशत बच्चे मानते हैं कि विकलांग बच्चे या तो सब पर बोझ होते हैं या फिर दुखी रहते हैं या पढ़ाई में अच्छे नहीं होते। इसकी वजह से वे विकलांग बच्चों के प्रति असंवेदनशील हैं।

नागरिकता संबंधी प्रश्नों के उत्तर में पाया गया कि कक्षा 8 के मुकाबले कक्षा 4 के बच्चे अपने नैतिक कर्तव्यों को ज्यादा समझते हैं। पर्यावरण संबंधित मुद्दों के बारे में करीब 19-23 प्रतिशत बच्चों को लगता है कि यह सरकार की जिम्मेदारी है।

बच्चों के मूल्यों और आपसी व्यवहार पर 30 प्रतिशत बच्चों का मानना था कि वे वाद-विवाद को जीतना चाहते हैं और विचारों के मतभेद उनके लिए असहनीय होते हैं। इस कारण वे आक्रामक ढंग से वाद-विवाद करते हैं।

बच्चों के पूर्ण विकास के लिए 70 प्रतिशत से ज्यादा प्रधानाध्यापकों का मानना है कि बौद्धिक के साथ-साथ अन्य गतिविधियां जैसे खेलकूद, नाटक, नृत्य, वाद-विवाद, संगीत, चित्रकला आदि भी आवश्यक हैं। परन्तु बच्चों की समय-सारिणी (Time-table) के अनुसार इन सभी गतिविधियों को अलग-अलग करीब 9-10 प्रतिशत का समय दिया जाता है जबकि 60 प्रतिशत का समय बाकी विषय आधारित पढ़ाई को दिया जाता है।

शैक्षिक माहौल : कुछ नतीजे

इस अध्ययन में प्रधानाध्यापकों से मूल्यांकन, अनुशासन, बच्चों के दाखिले और अध्यापकों के चुनाव आदि से जुड़े मुद्दों पर आंकड़े एकत्रित किए गए। इन सभी मुद्दों पर प्रधानाध्यापक का निर्णय मान्य होता है। अध्यापक केवल पाठयक्रम से जुड़े निर्णय लेते है। अध्ययनकर्ताओं ने इसको बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन से जोड़ते हुए बताया है कि जहां अध्यापकों को स्कूल में निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया गया है वहां बच्चों का प्रदर्शन ज्यादा बेहतर रहा है। करीब 55 प्रतिशत अध्यापकों का कहना है कि महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लेने से पहले उनकी राय नहीं ली जाती।

मूल्यांकन, फीडबैक और परामर्श के विषय में अध्यापकों का मानना है कि मूल्यांकन से उनकी अपने विषय की समझ और पढ़ाने के तरीकों में सुधार होता है परन्तु इससे बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन में ज्यादा सुधार नहीं दिखता। प्रधानाध्यापकों का मानना था कि मूल्यांकन से केवल अध्यापकों की अपने विषय पर पकड़ मजबूत होती है पर उनके पढ़ाने के तरीकों में कुछ बदलाव नहीं आता।

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया पर अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों से हुए साक्षात्कारों में पाया गया कि इन स्कूलों में अध्यापकों के मुकाबले प्रधानाध्यापकों का रचनात्मकतावादी (Constructivism) विचारधारा पर ज्यादा विश्वास है। अध्यापक ढांचागत गतिविधियां (Structural) जैसे पाठ योजना बनाना, गृहकार्य देना फिर उसको जांचना आदि पर ज्यादा ध्यान देते हैं। गतिविधियां जिनसे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया बेहतर हो सके जैसे समूहों में कार्य करना, कक्षा की गतिविधियों में ज्यादा भाग लेना, स्वयं अपने

कार्य का मूल्यांकन करना आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता।

कक्षा का माहौल : कुछ नतीजे

कक्षा के माहौल के बारे में सभी बच्चों ने कहा कि एक-दूसरे को जानना, दोस्ताना व्यवहार करना, कक्षा की गतिविधियों पर ध्यान देना और अपना कार्य समय से करना आदि महत्त्वपूर्ण हैं। पर बहुत ही कम बच्चों ने कक्षा में होने वाली गतिविधियों में जांच-पड़ताल (investigation) या नक्शे पढ़ना, ग्राफ, आरेख (Diagram) आदि को चुना।

अनुशासन के विषय में बात करने पर पाया गया कि लगभग 30 प्रतिशत प्रधानाध्यापक और 40 प्रतिशत अध्यापकों का मानना है कि पढ़ाई के लिए अनुशासन होना जरूरी है और अनुशासित रखने के लिए अध्यापकों की बच्चों पर पकड़ होनी जरूरी है। बच्चों में अध्यापकों के प्रति डर होना चाहिए तथा जो बच्चे पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते या बात नहीं मानते उनको शारीरिक दंड देने में कोई हर्ज नहीं है। परन्तु ऐसी सोच वाले अध्यापक बच्चों को कक्षा में भाग लेने का मौका नहीं देते और कड़क अनुशासन के चलते बच्चे भी प्रश्न करने में हिचकिचाते हैं। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि जहां भी बच्चों पर ज्यादा सख्ती बरती जा रही है वहां बच्चों का प्रदर्शन अन्य स्कूलों के मुकाबले खराब रहा है।

रिपोर्ट के अन्त में शैक्षिक माहौल और गुणवत्ता को लेकर मुख्य नतीजों की समीक्षा की गई और कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो इस प्रकार हैं : सह-बौद्धिक गतिविधियों में संगीत, नृत्य, नाटक के मुकाबले खेल-कूद और चित्रकला को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : 2005 का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया कि बौद्धिक एवं सह-बौद्धिक दोनों गतिविधियों में बच्चों को शामिल करने की आवश्यकता है। परन्तु इस अध्ययन से यह निकल कर आया है कि इन गतिविधियों के लिए 19 प्रतिशत समय भी नहीं निकल पाता है। जेंडर आदि सामाजिक मुद्दों पर बच्चों को बहुत ही असंवेदनशील पाया गया है। इन मुद्दों पर बच्चों की सोच प्रगतिशील नहीं है। बच्चों के विषय आधारित प्रश्न पत्रों में प्रदर्शन एवं सामाजिक मुद्दों पर उनके भाव यह बताते हैं कि स्कूल बच्चों को अच्छी तरह शिक्षित नहीं कर पा रहे हैं।

सिफारिशें

अध्ययनकर्ताओं ने रिपोर्ट के अंत में नतीजों को ध्यान में रखते हुए कुछ सिफारिशें की हैं। जैसे स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता से जुड़े मुद्दों को समझने के लिए एक व्यापक स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम (awareness campaign) होना जरूरी है। विभिन्न प्रश्नों पर जो बच्चों के विचार निकल कर सामने आए हैं उनके पीछे छुपे हुए कारणों को जानना और समझना जरूरी है।

कुछ वैकल्पिक शिक्षा संस्थानों पर बौद्धिक और सह-बौद्धिक दोनों गतिविधियों पर ध्यान दिया जाता है, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों को भी जांचा-परखा जा सकता है ताकि शिक्षण माहौल में सुधार संभव हो सके। यह अध्ययन सुझाव देता है शिक्षा जगत में शैक्षिक गुणवत्ता को बनाए रखने हेतु विशेष प्रचार-प्रसार अभियान की आवश्यकता है।

अन्त में, यह अध्ययन निजी स्कूलों में शिक्षण की गुणवत्ता के बारे में लोगों के मन में बन चुकी मान्यताप्राप्त आम धारणा पर पुनर्विचार करने और उनकी गुणवत्ता को सही प्रकाश में समझने का एक अवसर प्रदान करता है। यदि शिक्षा की गुणवत्ता को शिक्षा के लक्ष्यों के साथ जोड़कर देखें तो यह कहा जा सकता है कि निजी स्कूलों के बारे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया करवाने की धारणा निर्विचार नहीं है। इन स्कूलों में बच्चों की समझ और शिक्षा से अपेक्षित परिणामों के बीच एक गहरी खाई नजर आती है। यह खाई बच्चों की समझ से लेकर लोकतांत्रिक समाज के लिए अच्छे संकेत नहीं देती। यह अध्ययन न सिर्फ निजी स्कूलों के प्रति बनी धारणा को प्रश्नित करता है बल्कि निजी स्कूल प्रबंधन और नीति-निर्धारकों को भी आगाह करता है कि यदि शिक्षा की गुणवत्ता को अर्जित किया जाना है तो विषय संबंधी समझ और शिक्षा के उद्देश्यों को एक साथ रखकर देखना होगा।

मेरे विचार से शिक्षा जगत से जुड़े सभी लोगों के लिए आज के शैक्षिक माहौल और शिक्षण की गुणवत्ता को दर्शाने वाली यह अध्ययन रिपोर्ट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा प्रणाली में शिक्षण माहौल और शिक्षा की गुणवत्ता को बरकरार रखने हेतु इस अध्ययन से मदद मिल सकती है। यह एक शुरुआत है और इस विषय पर अभी और काम करने की जरूरत है ताकि कुछ ठोस और प्रामाणिक तथ्यों से हम रूबरू हो सकें और शिक्षण प्रणाली में अपेक्षित सुधार सम्भव हो सके। ◆